भैंस भारत की 'ब्लैक गोल्ड', इसके संरक्षण और वैज्ञानिक विकास पर विशेष ध्यान जरूरी : डॉ. अमरेश कुमार

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर–आईवीआरआई), इज्जतनगर में आयोजित राष्ट्रीय भैंस विकास सम्मेलन–2025 के समापन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. अमरेश कुमार, महानिदेशक, केसीएमटी ने कहा कि भैंस भारत की "ब्लैक गोल्ड" है और यह केवल दुग्ध उत्पादन तक सीमित नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, पोषण सुरक्षा और आजीविका का महत्वपूर्ण आधार रही है।

डॉ. अमरेश कुमार ने कहा कि हरियाणा और पंजाब जैसे राज्यों में भैंस को पारंपरिक रूप से संपत्ति के रूप में देखा जाता था। पहले भैंस केवल दूध देने वाला पशु नहीं थी, बल्कि ग्रामीण जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा थी। आज परिस्थितियाँ बदल रही हैं, लेकिन भैंस की उपयोगिता और महत्त्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में भैंस मांस (बफैलो मीट) के निर्यात से भारत को अरबों डॉलर की विदेशी मुद्रा प्राप्त हो रही है, लेकिन इसके बावजूद नर भैंसों के वैज्ञानिक उपयोग और मांस उत्पादन के क्षेत्र में पर्याप्त योजनाबद्ध विकास नहीं हो पा रहा है। उन्होंने बताया कि देश के विभिन्न हिस्सों में नर भैंस पालन एवं मांस उत्पादन से जुड़े कई प्रोजेक्ट चल रहे हैं, जहाँ निजी कंपनियाँ प्रोत्साहन भी दे रही हैं।

डॉ. कुमार ने पूर्व में आईसीएआर द्वारा किए गए शोध का उल्लेख करते हुए कहा कि विभिन्न आयु वर्गों में नर भैंसों के पोषण और प्रबंधन पर किए गए अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि प्रारंभिक अवस्था में वैज्ञानिक पोषण देने से मांस की गुणवत्ता, प्रोटीन कंटेंट और ऑर्गेनोलैप्टिक गुणों में उल्लेखनीय सुधार होता है तथा फैट कंटेंट में कमी आती है। जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में उन्होंने कहा कि पशुओं से निकलने वाली मीथेन गैस को कम करने में पोषण विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि हम आहार प्रबंधन और पोषण रणनीतियों के माध्यम से मीथेन उत्सर्जन को नियंत्रित कर सकें, तो जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने में यह एक बड़ा योगदान होगा। उन्होंने इस दिशा में हो रहे अनुसंधान को और तेज करने की आवश्यकता पर बल दिया।

भैंसों के आनुवंशिक सुधार पर बोलते हुए डॉ. कुमार ने कहा कि भारत में ब्रीडर सोसायटी का गठन अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि यदि एक मुर्रा भैंस 25 लीटर दूध देती है और दूसरी भैंस केवल 5–10 लीटर, तो वैज्ञानिक रूप से उच्च उत्पादक नस्लों के आधार पर ही जेनेटिक सुधार किया जाना चाहिए। पिछले कई दशकों में नस्ल सुधार की गति अपेक्षित नहीं रही है, जबकि यूरोपीय देशों में नस्ल आधारित पशुपालन से उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

इस अवसर पर डॉ. एस. के. सिंह, संयुक्त निदेशक (शोध) एवं कार्यवाहक निदेशक, आईवीआरआई ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि यह राष्ट्रीय सम्मेलन भैंस अनुसंधान एवं विकास से जुड़े वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं, विकास अधिकारियों और निजी क्षेत्र के बीच सार्थक संवाद का प्रभावी मंच बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन ने आनुवंशिक सुधार, प्रजनन, पोषण, रोग प्रबंधन, जलवायु सहनशीलता और किसान आय वृद्धि जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक मंथन का अवसर प्रदान किया।

डॉ. सिंह ने कहा कि भैंसों को एक अलग एवं विशिष्ट प्रजाति के रूप में देखते हुए इनके संरक्षण, प्रजनन सुधार, गुणवत्तापूर्ण दूध उत्पादन तथा उचित मूल्य सुनिश्चित करने हेतु विशेष नीतिगत पहल आवश्यक है। उन्होंने आईवीआरआई, आईएसबीडी और राज्य पशुपालन विभागों के बीच साझेदारी को और मजबूत करने पर बल दिया, ताकि तकनीकों का परीक्षण और विस्तार किसान–केन्द्रित मॉडल के माध्यम से किया जा सके।

डॉ. सिंह ने भैंस अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में आजीवन योगदान देने वाले वरिष्ठ वैज्ञानिकों के योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि उनकी नेतृत्व क्षमता ने देश में भैंस आधारित पशुपालन की दिशा और दशा दोनों को बदलने का कार्य किया है। उन्होंने युवाओं, विशेषकर युवा वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों से आह्वान किया कि वे नवाचारों को खेत स्तर तक पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. इंद्रजीत सिंह, अध्यक्ष, इंडियन सोसाइटी फॉर बफ़ेलो डेवलपमेंट एवं कुलपति, बिहार एनिमल साइंस यूनिवर्सिटी, पटना ने कहा कि भारत के पास विश्व की लगभग 56 प्रतिशत भैंस आबादी है और वैश्विक भैंस दुग्ध उत्पादन में भारत का योगदान लगभग 68 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि भैंस भारत की एक अमूल्य प्राकृतिक धरोहर है और पूरी दुनिया भैंस से जुड़े किसी भी विषय में भारत की ओर देखती है। उन्होंने कहा कि भैंस मांस की अंतरराष्ट्रीय मांग बहुत अधिक है, विशेषकर पड़ोसी देशों और वियतनाम के माध्यम से चीन तक इसकी आपूर्ति होती है। सम्मेलन में यह सुझाव भी सामने आया कि मांस उत्पादन के लिए पोषण एवं प्रबंधन आधारित रणनीतियों पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। डॉ. इंद्रजीत सिंह ने कहा कि सम्मेलन में प्रस्तुत सभी शोध पत्रों, सिफारिशों और विचारों को संकलित कर एक नीति–सुझाव पुस्तिका (बुकलेट) प्रकाशित की जाएगी, जिसे नीति निर्माताओं तक पहुँचाया जाएगा, ताकि भैंस विकास से जुड़े निर्णय वैज्ञानिक आधार पर लिए जा सकें। आयोजन सचिव डॉ ज्ञानेन्द्र सिंह ने अपने सम्बोधन में कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कहा कि इस सम्मेलन के तकनीकी सत्रों में जीनोमिक चयन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), एम्ब्रियो ट्रांसफर, सेक्स्ड सीमेन, संतुलित आहार, डिजिटल टूल्स, रोग निगरानी प्रणाली तथा वैल्यू चेन विकास जैसे विषयों पर गहन चर्चा हुई। लीड पेपर्स, पोस्टर प्रस्तुतियों एवं पैनल चर्चाओं में इस क्षेत्र की शोध चुनौतियों एवं संभावनाओं को रेखांकित किया गया। वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि प्रयोगशालाओं में विकसित तकनीकों को सरल, सुलभ और व्यवहारिक बनाकर किसानों तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए मजबूत विस्तार सेवाएँ, प्रभावी नीतियाँ और बाजार–उन्मुख उत्पादन प्रणाली विकसित की जानी चाहिए। साथ ही किसानों के पारंपरिक ज्ञान और सामाजिक–आर्थिक वास्तविकताओं को भी तकनीकी समाधानों में सम्मिलित करने की आवश्यकता बताई गई।

अंत में उन्होंने सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए इंडियन सोसाइटी फॉर बफ़ेलो डेवलपमेंट को बधाई दी तथा आईवीआरआई को आयोजन स्थल के रूप में चुनने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने आयोजन समिति, स्वयंसेवकों, सहयोगी स्टाफ और छात्रों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि यह राष्ट्रीय सम्मेलन भैंस विकास के क्षेत्र में वैज्ञानिक, नीतिगत और व्यावहारिक दृष्टिकोण से मील का पत्थर सिद्ध होगा।

इससे पूर्व हरी अब्दुल समद द्वारा सम्मेलन प्रगति आख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्मेलन में देश–विदेश से लगभग 230 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें वैज्ञानिक, शिक्षाविद, नीति निर्माता, उद्योग प्रतिनिधि, विकास अधिकारी, शोधार्थी एवं छात्र शामिल रहे।

सम्मेलन में छह तकनीकी सत्रों के साथ एक राउंड टेबल सत्र का आयोजन किया गया, जिनमें भैंस उत्पादन प्रणाली, जलवायु परिवर्तन, प्रजनन एवं आनुवंशिक सुधार, स्वास्थ्य एवं रोग प्रबंधन, पोषण एवं प्रबंधन, डिजिटल एवं प्रिसिजन टेक्नोलॉजी जैसे विषयों पर गहन चर्चा हुई। प्रत्येक तकनीकी सत्र के साथ समानांतर पोस्टर सत्र भी आयोजित किए गए। कुल मिलाकर 140 से अधिक शोध सार (एब्स्ट्रैक्ट्स)—मौखिक एवं पोस्टर प्रस्तुतियों के रूप में प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रूप से डॉ अंशुक शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थान के सभी संयुक्त निदेशकों सहित पूर्व निदेशकों, वैज्ञानिक तथा अधिकारी उपस्थित रहे।